

## माँ के त्याग

PAGE NO.:

ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौँद हुई थी।  
नन्ही-सी आँखें और मुड़ी हुई उंगलियाँ थी।  
ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौँद हुई थी।

नन्हे से शरीर पर नया कपड़ा पहनाती थी।  
घर में खाने के लाले थे पर फिर भी एफ़न्डी में पैसा जोड़ा  
करती थी।

उसके खुद के सपने अधूरे थे पर फिर भी मेरे सपने  
बुन रही थी।

ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौँद हुई थी।